मसीह में पूर्णता

फाफ डु प्लेसिस

फाफ डु प्लेसिस,
दक्षिण अफ्रीका

34 वर्ष की आयु में, फाफ डु प्लेसिस दक्षिण अफ्रीका के सबसे अधिक दाएं हाथ के बल्लेबाज थे, और उन्होंने खुद को राष्ट्रीय टीम के वर्तमान कप्तान के रूप में क्रिकेट के खेल में अग्रणी साबित किया है। नवंबर 2012 में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने के बाद, वह जल्द ही अपनी पहली उपस्थिति में टेस्ट शतक बनाने वाले चौथे दक्षिण अफ्रीकी बन गए।

एक बेहद सफल करियर के साथ सात साल और कई देशों में फैले, फाफ डु प्लेसिस यह नहीं भूल पाए हैं कि वह अपना विश्वास और महत्व कहां रखते हैं।

मैं स्कूल में सबसे अधिक खेल खेल रहा था, लेकिन क्रिकेट हमेशा मेरी नंबर 1 था। जैसा कि मैंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलना शुरू किया, मैंने जल्दी से यह जान लिया कि इस स्तर पर किसी भी खेल के साथ, आपको उच्चाई और नचिाई की गारंटी है। अब जब मैं अपने करियर में अधिक अनुभवी हूं, तो मैंने क्रिकेट में ही नहीं, बल्कि जीवन में भी ऊंचे और ऊंचे स्तर पर टिकना सीख लिया है। मैं अपनी व्यक्तिगत सफलताओं को अपनी असफलताओं के समान मानता हूं - जैसे कि बढ़ने और सीखने के अवसर।

मैं खुद को मसीह का अनुयायी समझकर बड़ा हुआ, लेकिन यह मेरे लिए सिर्फ एक धर्म था। मेरा यीशु के साथ कोई संबंध नहीं था, इसलिए मेरे हृदय में कभी कुछ नहीं आया। जब मैंने एक पादरी के साथ यात्रा शुरू की थी, - अब मेरा एक दोस्त - जिसने मुझे समझाया कि यीशु का प्यार वास्तव में कैसा दिखता है। एक बार जब मैंने इस शक्तिशाली सच्चाई को समझ लिया, तो मैंने बपतिस्मा लेने का फैसला किया। जैसे ही मैंने मसीह को अपना जीवन दिया और शुरू किया मेरा दिल तुरंत बदल गया।

परमेश्वर के सत्य को अधिक स्पष्ट रूप से समझना। जैसा कि मुझे मसीह में एक नई पूर्णता मिली है- कुछ ऐसा जो मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था - मैं अपने जीवन जीने के तरीके को बदलना चाहता था इन सच्चाइयों के साथ संरेखण में रहने के लिए। प्रारंभ में, कठिन था इसे समझना की अपना करियर और प्रदर्शन को परमेश्वर पर दे देना, उस पर भरोसा करना चाहे क्रिकेट के क्षेत्र में जो कुछ भी क्यों ना हो, चाहे परिणाम सफलता या असफलता हो। लेकिन अब, जैसा कि मैंने अपने विश्वास और परमेश्वर की संप्रभुता के ज्ञान में वृद्धि की है, मुझे सच में विश्वास है कि उसने मुझे यहाँ एक कारण के लिए रखा है। उसमें मेरा एक उद्देश्य है।

इस खेल में कुछ चुनौतियां हैं जिनका मैं मसीह-अनुयायी के रूप में सामना करता हूं। पहला ऐसा माहौल है जिसमें मैं खुद को ढूंढता हूं। कई क्रिकेट खिलाड़ी हैं जो विभिन्न भरोसे और विश्वासों से आते हैं, और कई टीमों में, मैं केवल मसीह-अनुयायी रहा हूं। यह इस अर्थ में काफी अकेला हो सकता है कि मेरे पास वहां लोग समर्थन के लिए नहीं या सिर्फ प्रार्थना करने के लिए भी नहीं होते। दूसरा संघर्ष हमारे सामने आने वाले प्रलोभनों का है। क्योंकि हम दुनिया भर में बहुत सारी यात्रा करते हैं, कई ऐसी परिस्थितियाँ निर्माण होती हैं जहाँ आपको कुछ करने के लिए समूह के दबाव का सामना करना पड़ता है। लेकिन जैसे-जैसे मैं अपने विश्वास में अधिक मजबूत और परिपक्व होता जाऊंगा, वैसे मुझे नहीं यह कहना आसान होगा।

मुझे कारण पता है कि मुझे इस खेल में सफलता मिली केवल यीशु के कारण और मैं उसके लिए हर दिन धन्यवाद देता हूं। जब मेरा करियर पूरा हो जाता है, तो मुझे एक बहुत अच्छे अगुवे के रूप में याद किया जाना चाहता हूँ जिसने अन्य खिलाड़ियों को चुनौती दी कि वे सर्वश्रेष्ठ कर सके। मैं किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में भी जानना चाहता हूं जो वे जिस चीज में विश्वास करते हैं, उसके लिए खड़े हुए।

अंत में, मैं हमारे देश पर सकारात्मक प्रभाव डालना चाहता हूं। मुझे पता है कि मेरा उद्देश्य क्रिकेट के मैदान पर जितने रन बनाने से ज्यादा है। मुझे उम्मीद है कि लोगों के साथ समय बिताने में सक्षम होने के लिए मैं उन्हें यीशु का प्यार दिखाऊंगा और यह भी देखूंगा की उनका प्यार दूसरों तक प्रकाश फैलाये।

फाफ की पसंदीदा कविता:

"किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।"

- फिलिप्पियों 4:6